श्री जयपाल सिंह कश्यप (आंवला) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे लोक सभा क्षेत्र आंवला में रेल यातायात में विशेष सुधार की आवश्यकता है । बरेली से एक पूर्वोत्तर रेल कासगंज की ओर जाती है और एक बरेली से आंवला व चन्दौसी की ओर उत्तर रेलवे जाती है और दूसरी बरेली से शाहजहांपुर की ओर रेलवे लाइन जाती है । बरेली से कासंगज के लिये जो रेल लाइन जाती है, उस पर बहुत सी ट्रेनें समय पर नहीं चलती हैं और उनके समय भी सही रूप से निर्धारित नहीं किये गये हैं ।

बरेली स्टेशन पर रात को लखनऊ मेल, काशी विश्वनाथ, दून एक्सप्रेस व अनेक ट्रेनों से विभिन्न स्थानों से यात्री आते हैं, और जो बदायूं व कासंगज की ओर जाना चाहते हैं, उनके लिये अगले दिन प्रातः 10 बजे तक कोई भी ट्रेन उपलब्ध नहीं होती । ऐसे हजारों यात्री प्रतिदिन परेशान रहते हैं । इसी प्रकार कासगंज से बरेली की ओर जो यात्री चलते हैं, उनको शाम को या रात में कोई ट्रेन उपलब्ध नहीं होती, उनको कासगज में ही पड़े रहना पड़ता है । यह आवश्यक है कि प्रातः 5 या 6 बजे के मध्य एक ट्रेन बरेली से कासगंज को चलाई जाय और इसी प्रकार शाम को 6 बजे एक ट्रेन कासगंज से बरेली को चलाई जाय बरेली से दिल्ली जाने वाले यात्रियों को दिन में कोई ट्रेन उपलब्ध नहीं है । बरेली से एक मेल एक्सप्रेस ट्रेन दिल्ली के लिये वाया रामपुर व एक ट्रेन वाया चन्दौसी चलना आवश्यक है ।

आंवला से जो एक मेल की बोगी आंवला से दिल्ली को जुड़ती थी, उसको भी रेल विभाग ने रद्द कर दिया है । बरेली, बदायूं, कासगंज की ओर से जो यात्री मथुरा होकर दिल्ली, बम्बई, जयपुर आदि स्थानों पर जाना चाहते हैं, उनको भी कोई ट्रेन दिन में उपलब्ध नहीं है । बरेली से दिन में एक मेल या एक्सप्रेस मथुरा जंक्शन को और इसी प्रकार दिन में मथुरा जंक्शन से एक ट्रेन बरेली जंक्शन को चलना आवश्यक है । बदायूं व उसके आस पास के सरकारी कर्मचारी, छात्र और कचहरी जाने वाले लोक व आम जनता को भीड़ के कारण ट्रेनों में स्थान नहीं मिल पाता और उनको दफ्तर व स्कूल के समय पर ट्रेनें उपलब्ध नहीं हो पाती । इसलिये, बरेली, बदायूं व कासगंज के बीच एक शटल चलने की आवश्यकता है ।

मुझे रेल विभाग का ध्यान विशेष रूप से इस ओर दिलाना है कि बरेली, बदायू कासगंज, भमौरा, मकरन्दपुर, बमयाना, घटपुरी, आंवला आदि स्टेशनों पर टिन शैड व बैठने की बेंचें अच्छे वेटिंग रूम रोशनी व पानी की व्यवस्था नहीं है जिससे यात्रियों को बड़ी परेशानी होती है । जो ट्रेनें चलाई जाती हैं, उनकी खिड़कियां शीशे, चिटखनी, बाथरूम की टोटियां व अच्छे शौचालय उपलब्ध नहीं रहते और अधिकतर सीटों पर रेक्सीन वगैरह भी गायब रहती है ।

इन सारी समस्याओं का समाधान रेल विभाग को अतिशीघ्र करना चाहिये ताकि इस क्षेत्र के लोगों की परेशानियां दूर हो सकें । सरकार को इस पर अविलम्ब कारगर कदम उठाना चाहिये ।

(vii) Problems of Washerman in Delhi.

श्री चन्द्रपाल शैलानी (हाथरस) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं राजधानी में धोबियों की समस्याओं तथा दिल्ली प्रशासन द्वारा की जा रही उनकी घोर उपेक्षा की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ।

आजादी के 35 वर्षों के बाद आज तक यहां के धोबियों के लिये कपड़े धोने के लिये स्वच्छ पानी के घाटों तथा अस्थायी अड्डों का निर्माण नहीं किया गया है, इसलिये मजबूर होकर उन्हें ज्यादातर नागरिकों के कपड़े यमुना तथा गंदें नालों के गंदे पानी

[श्री चन्द्रपाल शैलानी]

में धोने पड़ते हैं, जो न केवल नागरिकों, बल्कि खुद धोबियों के स्वास्थ्य के लिये भी हानिकारक हैं ।

श्रीमन्, दिल्ली में धोबियों के लिये वर्तमान घाटों की संख्या पर्याप्त नहीं है । 1970 के बाद से नये घाटों का निर्माण नहीं किया गया है । 1975 में रामकृष्णपुरम क्षेत्र में एक घाट और कुछ मकान जरूर बनाये गये थे, परन्तु मकान धोबियों के बजाय अन्य लोगों को आवंटित कर दिये गये और घाट पर समुचित व्यवस्था न होने के कारण आज तक वह खाली पड़ा है ।

दिल्ली के धोबियों के अनेक संगठन और उनके नेता समय समय पर दिल्ली प्रशासन को अपनी समस्याओं तथा मांगों के संबंध में अवगत कराते रहे हैं, किन्तु इस संबंध में अभी तक कोई ठोस एवं प्रभावी कदम नहीं उठाया गया है । इनलोगों की यह भी मांग है कि हलवाईयों की तरह उन्हें भी कोयले का कोटा निर्धारित किया जाय और कपड़े धोने के काम आने वाली अन्य सामग्री भी उन्हें उचित मूल्य पर दिलायी जाये तथा रहने के लिये आवास की व्यवस्था की जाये ।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि इस समाज के काम और मेहनत को ध्यान में रखकर वह दिल्ली प्रशासन को निर्देश दे कि धोबियो की उपरोक्त समस्याओं को हल करने के लिये तुरन्त आवश्यक कार्यवाही अमल में लायें ।

(viii) Crisis in handloom industry in Kerala due to accumulation of Stocks.

SHRI K. KUNHAMBU (Cannanore): I want to draw the attention of the Government to the serious crisis facing the handloom industry in Kerala. Kerala is famous for its handloom products from time immemorial. But, it is facing such a serious crisis that about one lakh of workers employed in this industry are today out of job. Lack of demand in the international market and the consequent stocks accumulation are the main causes of this crisis. According to an estimate, Rs. 1.5 crores worth of handloom clothes have accumulated in the private sector and Rs. 7 crores worth of clothes in 'Hantex' and Handloom Development Corporation. Unless an all-out effort is made to move the stock, the workers and their families will face starvation deaths. Cannanore and Calicut districts are the most affected areas, as majority of the looms are centred in these two districts.

Loss of international market due to stiff competition from countries like Taiwan, South Korea, Hong Kong, China, Sri Lanka and even Pakistan is one of the reasons for the present state of affairs. Another reason is the abnormal rise in the prices of yarn and the chemicals used in dyeing etc. For example, the price of yarn of lower count of 20 was Rs. 30|- in 1968. It has now gone up to Rs. 105|-. The low wages prevailing in the neighbouring States of Tamil Nadu, and Karnataka have also contributed very much to this crisis.

In this situation, the Government has to come forward to help this sector to tide over the present crisis. Immediate steps should be taken to make enough yarn available at reasonable prices. Chemicals used in this industry should be supplied at reasonable prices. These should be distributed through cooperative societies or Government Depots. A levy system should be introduced in the supply of yarn so that the mills could be compelled to supply it to the handloom units. Free ration should be supplied to the workers till they get employment. I would request the Government to take these steps immediately and save this industry and the starving workers.